

श्रीमद्भारुगवतं राज्ञ्यर्थं श्रीयन्त्रम
कमकस्मिन्समयनगवान्कन
कथवज्जोगिनागलेषामेव
समाभिसमायन्नेद्यममूद्यक
लुनयःवदश्यवकश्कश्च
श्चश्चश्चश्चश्चश्चश्चश्च
वैष्णविकानां शुद्धमानसि

[illegible][illegible]

मधुलमा रक्तसंयुतं निर्वीतलं ददिनं यत्तु तस्मिन्मायूकं पंचवृद्धापध्वरितं गतं संयुक्तवृद्धा-
नां सुनपत्यानुमादनां भेदादौ तादिसहस्रं तं हर्मोतयापदसना ॥ अक्तनिद्रागताध्यातहं कान-
हृदि नोक्तं तं हं कानपविनक्तं सूर्यमधुलसहस्रकानेति निर्जतः ॥ यथा गपुरुः ऊर्ध्वं कानपवि-
धार्गखजपधिवानयूकं सवसत्त्वार्थसहस्रकं विहावयत ॥ विरुजं नत्वमोलिनं नाथपध्वनि-
धाय विरुधिमं अक्षयदानन्याति काकसर्वखजतिरुधिकं सूर्यमधुलसमायूकं सूलवृद्धाः
निर्मलं वागगतं नीयो गं यं चमूडापध्वरितं व्याधुतमपविधाने ॥ कष्टमालीनिनेष्टकेश-
वर्ज्यमभेदात्मकं नाथः अटभीयूष्यसन्निहं ॥ निव्यायमानं दंष्ट्राद्वं बहुमादरुयानकं ॥ नक्तचक्षु-

[illegible]

[illegible]

स्वाहा ॥ ॐ सर्वविद्याधिपतय प्रयत्नकुमकुना नमः सर्वजगदिनीनां ॥ अस्य श्वश्रुं हं हृद् ॥ ॐ काला कूला
लवदनः रुसं रुला रुल वज्रसूत्रजः ॥ रुनं रुनयं ॥ सर्वमघवाकृष्टिं सुसूयं रुदयं ॥ ३ ॥ सर्वपा
धिया धाययं हं हृद् ॥ ॐ नमो महा नमो नमो हं हृद् ॥ ॥ ॐ मिमकुपटल ॥ ॥ ॐ काला वना
विधिं प्रकाशना जपक्रमकुदवका कानयागक ॥ नीनं शुभालिका धा ॥ त्वा अथ वानागरु निविश ॥
आरुहा वयउ कवकुत नमान ॥ १ ॥ तं कालधीन नकुदात्म कथा ॥ गतः जपत्स कुं महा रूप ॥ ४ ॥ तावहा
वयत्स कीया वनं खदाल ज्ञायत ॥ खदत विविस्व मनूस्म नरु ॥ रुथा नात्म कथा ॥ गध विह नद्यागी
यथ हृया ॥ १ ॥ ॐ होना दिवसने वगीन वाद्ययस्वनेन ॥ विहनेत्यधेश्वरी नयथा हृदं गंजा कथं हृद

यद्गुणानि हि लूनसंनदपिवात्मनानिवासः ॥ अभातघातसर्वमात्रविवर्जितः ॥ मायामाहासहा
महाबाधितस्यान्ययाविवर्जयत् ॥ लक्षकनरुवसिद्धिद्विद्वदजकिनीजगनः यय ॥ ४४ ॥ पक्ष
दृष्टीं विपुनः ॥ लक्षपने ॥ आयत्तिं धिक्कर्मोदिलक्षकने कात्रयद्व ॥ काटिजकुत्रापनरुवसिद्धि
दवताकात्रमूर्तिः ॥ सयकाटिजायनजायतुवववीयद ॥ ४५ ॥ लिविलहितायागीसकृपानर
नः ॥ अयदिजायतुसर्वव्यावृत्तसिद्धयत्रमात्रिव ॥ ४६ ॥ यागीयागविशुद्धावरुद्राहृदवि
कल्पयत् ॥ लक्ष्य ॥ ४७ ॥ विरुद्धनवासावागविवर्जितः ॥ ४८ ॥ अक्षरमूलादसर्वरुद्रादक्षायमोलिनं
॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

वज्रधनधीमोलिनं उच्छ्रयकथतः मरुपदसात्रसंग्रहः नानादिरुद्रनिगदिमरुयकार्थयं कि ॥ १ ॥
कवीननिर्गन्तुसात्रसंग्रहः नानादिरुद्रनिगदिमरुयकार्थयं कि ॥ २ ॥
उच्छ्रयं दकलुवीनस्यसाधनं गायविष्टुतिमहासर्ववीनवीनस्यवर्ययासमगुरुदयत्रिपद्यत्र अ
लमिनि किमर्थं नामसंग्रहः ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

[illegible][illegible]

मम ध्यान कल्प तलिरुद्रा दुर्लभ ज्ञान दत्त दह २ विपना त्रिक्रिया माता मनु वविव दशा पम्भ लदन
 पूर्व विकायां पत्रि यपन ४ म्भु हा का दम त्रि यम ॥ ॐ वधु महा बा प्र धा ज्म क क व धा ग द्वा य
 य २ हू हू ॥ ॐ तम कुं प विजय नमः ॥ ॐ ना ए म्भो का य य न ॥ कल न ग रु क ता य मं द ह ॥
 ॐ ज मा क क ४ जी ४ म्भो ४ हू ना ग य २ व धु प व धु हू ३ हू द्वा ॥ ॐ ग्म क्त स हि व य ला य म्भ ॥
 ॐ हिलि २ हू २ ४ ॥ ॐ ग्म क्त स र्प ४ य ना य म्भ ॥ ॥ म म्भो २ ४ ४ ग्म क्त व्या धु य ना य म्भ ॥ ॥ वे ३
 आ २ ४ ४ ग्म क्त हू ली प ना य म्भ ॥ ॥ ता हू २ ४ ४ ग्म क्त ग धु प ला य म्भ ॥ ॥ ॐ डी व द्वा ना
 य व धु मे हा ना य म्भ हू हू ॥ ॐ गि क्त ४ ना का द य न्ना न प ला य म्भ ॥ ॥ ॐ हिलि २ हू ४ ॥ लो व ना

१०

मलावन हू हू ॥ ॐ नि व ४ ४ ल म ४ ४ ॥ ॥ ॐ विलि मिलिः ललि क हू हू ॥ सं का व न म ४ ४
 ॥ ४ ० १ ॥ ॐ ॥ व क ग हू धी र वा हि वि प व न्पि धी र व ४ ३ म ४ २ व धु मे हा म ना य य ति स्त्रा हा ॥
 ॐ हू ट का व हू हू २ हा २ हू हू ॥ ॐ गि म्भान की उ न्म ४ ४ ॥ ॥ ॐ सर्व विद्या धि प त य प न य
 नु म्भ ना भ न स र्वे ग कि नी ना ज म य २ म्भ की ल य २ हू हू हू ॥ ॐ गि न ग व क्त य व भ म ४ ४
 ॥ ॥ ॐ काला क ना व द न्म २ हू ला हू ल व ड म्भ व ड म्भ २ हू व य २ स र्व म्भ घ वा न टा हू र
 म्भ २ हू म्भ २ य ४ ३ य ४ ३ स र्व व नी म्भ य २ हू हू ॥ ॐ तम कुं प ज्म व ला क्वा क म्भ घा न
 ट य ति ॥ ॥ ॐ व जि नि व ड पा त य म्भ य ति ना हा य य तिः काल २ ॐ व धु मे हा ना य म्भ हू हू ॥

वालीकृतिः कागहिवावदुजाययद्धृष्टा अरिसंता अन्तनेवाहा रुवभक्तं पत॥ यश्च
 माननिः प्रियेयं नमनं नयति कुरु धाम ॥ १ ॥ अथैतौ देवैः रक्षा प्रयश्चानेव नमश्च २० अं च धुमहा
 नायधहं हृद ॥ ०० तिगवाहि को वं सं का जलपना न अशा रुवभतां हिमदिशगवा (म) ह्यनिय
 न ॥ दीनं नमवक्तु वं उधर नमा क ॥ निम्बका कायथगः प्रपन्नमिनां दोहयहनन ॥ १ ॥ ११
 अं च धुमहा नायध अमक मवा दय हं हृद ॥ अशा रुवभतां हिम कृतं रु अमर हे नि क्रिप ह भश
 गरु उच्चायति स कृद म ॥ सर्वा र्थे नैना उ कार्या विवा न धा ॥ यश्च मानो पश्य न विवा धिना कथा द
 लिं समादाय हं न कुरु वं पति अन्तान्यं विदधयत् ॥ अरु न नाय कार्या विवा न धा ॥ कथायं मरु

॥ ॥ अं च धुमहा नायध हं हृद ॥ ०० ति विदधय
 ॥ ॥ अरुयं कर्म समा लिखा ताल कन वरुं गुलं वरुं घाद वरुं जी का नं ह्यो कालं मरु मथ न
 रुदि प्रा नर सा ध कं सु य दृ क ॥ य न मा ला मरु सु सं वरुः य जा मु ला स मा नं रु ॥ ०० ति की
 पवि स्थं न स्य कर्म च द ना द द य न व क रु उ ध सं वरु या दं धा रु नि क्रि प रु ॥ ॥ वा म
 र मा द ना का द य न अ म क म व र्म रु वे रु स म वा ना ध या व रु सर्व पां स रु धां म र व रु नं रु व
 ति ॥ अं च धुमहा नायध जी जी धा न व प व रु र प व रु र घ न र घा ट्य रु क रु र प रु व रु
 रु व य रु की ल य रु रु रु य रु मा रु य रु रु रु ॥ रु जा यं मा ल म रु ॥ ॥ अथ का क रु धि नं

गङ्गानि चतुर्नदीनायकः पश्यन्नात्मा कस्यैव तस्य यांति द्विपदः ॥ काकनखाद्यकमन्द
ब्रीहौ काककूटनीकुञ्जनाखाहा ॥ तत्र दहं जाकतहं श्रावयचं न हा समाहाययति
हृदहं ॥ ॐ तिस्रं काकचंचतां लिखात ॥ ॐ वरुनमाह ॥ ॥ अथ ॥ तत्र स्थं वक्रजं
कपजं रुमनस्य पद्मे द्विवाजने नीमककस्य साल्यं अनन्तं ॥ नृवक्रं ॥ गङ्गा पदपद
धारुणी नहिमस्ति ताङ्गी ॥ ॐ त्रयस्य मनु ॥ ॐ आकय २ माहाय २ नमः ॥ किवर्गं कृन्
खाहा ॥ उदयकीटं संग्रहं ॥ अथ ॥ निकाययक ॥ अमिताह ॥ अः नामिका न कृन् सह
वटिकां हृत्वा पूर्विकमनु धा ॥ तिस्रं खानयानदो हव्यं वधं हवति न गीसय ॥ ॐ नृप

[illegible]

मर्कयम्यास्थिगंकवाटिभर्षकर्मभिः अचलवाद्युभादन ३५॥ अविनालकलाव्यधवा
 वगयद्दुविवाहैरुद्वा ॥ ३६॥ निनिर्बकनवीनयनिर्दामनसहस्रहिलामनामाहिसन
 यसमाफ २॥ ॥ अचलाहिसमपनिदः ॥ ३७॥ निनिचंभीधिसदावंधेयमाकागना
 नामिनि ॥ ॥ यधमाहउपलावाः रुडनयानिधामः रुडनयानिधामः ॥ ३८॥ निनिचंभीधिसदावंधेयमाकागना
 महाधवनः ॥ ॥ निनिचंभीधिसदावंधेयमाकागना ॥ ३९॥ निनिचंभीधिसदावंधेयमाकागना
 गुरुसचहृद ॥ ४०॥ निनिचंभीधिसदावंधेयमाकागना ॥ ४१॥ निनिचंभीधिसदावंधेयमाकागना

१३

आश्विन शुक्ल	
३१	I